स्फूर्ति

प्रथमो भाग :

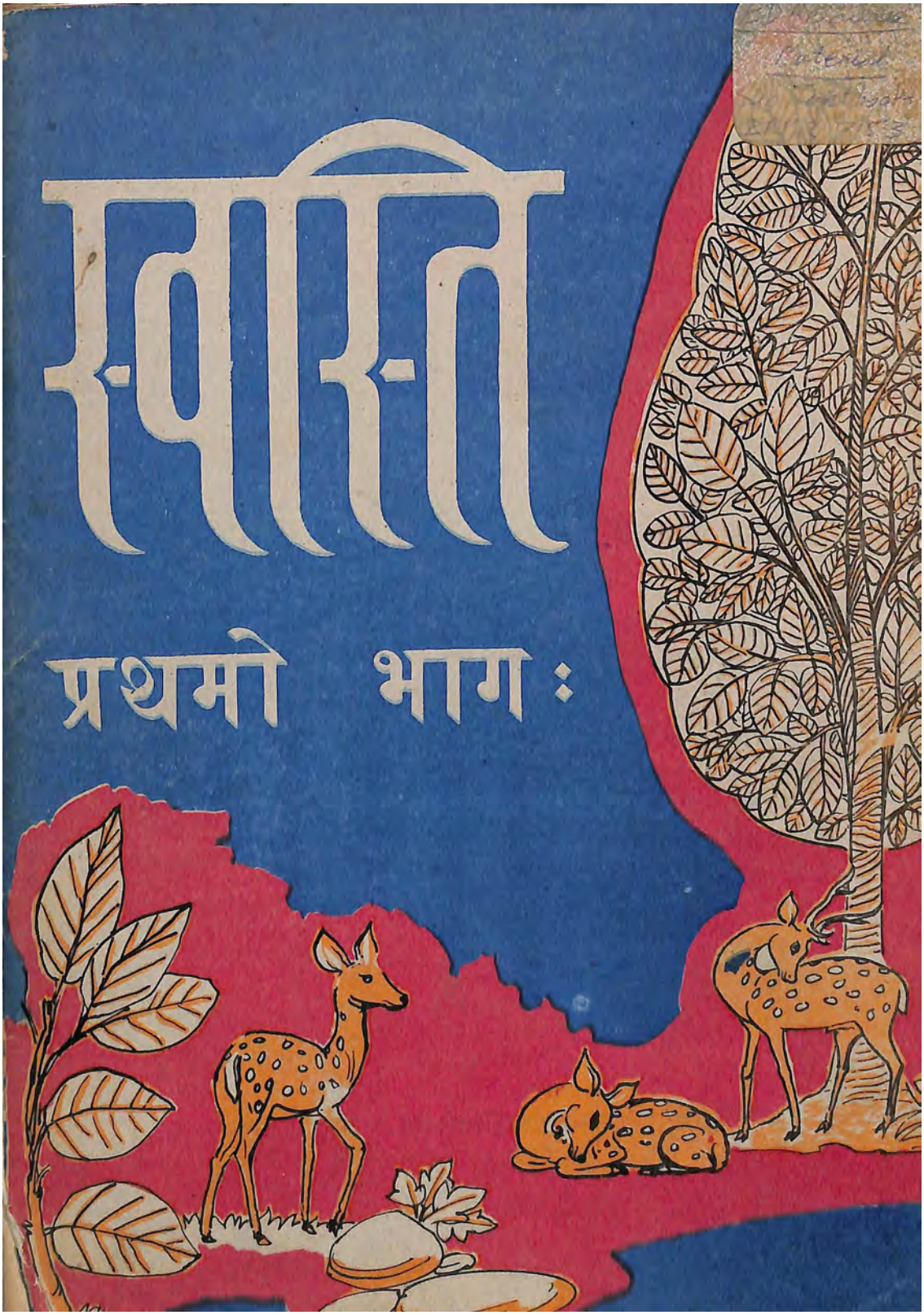

DATE DUE SLIP

Class No. ERH 3·1·153 *Book No.*

Accession No. 3023

This book should be returned to the Library on or before the date last stamped. Otherwise overdue charges shall be payable as per rules.

27/12/01		

स्वस्ति

Swasthi

Bagha - 1

प्रथमो भागः

संस्कृत-पाठ्यपुस्तकम्

डा० माणिक गोविन्द चतुर्वेदी

श्रीमती उर्मिल खुंगर

NIRANTAR
3023
11 May 2001

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
अप्रैल 1980 चैत्र 1902

अठारहवां पुनर्मुद्रण
नवंबर 1999 कार्तिक 1921

PD 190T GR

©राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 1980

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक को पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छपना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पून प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ को गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल्य आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार में व्यापर द्वारा उधारी पर पुनर्विक्रय या किराए पद न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्जी (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नही होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110016

108, 100 फीट रोड, हौस्डेकेरे
होली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूर 560085

नवजीवन ट्रस्ट रोड,
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380014

सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
32, बी.टी. रोड, सुखचर
24 परगना 743179

रु. 17.00

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा सरस्वती हाउस, सरस्वती ऑफसेट प्रिन्टर्स प्रा.लि., A–5, नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया फेस–II, नई दिल्ली 110028 द्वारा मुद्रित।

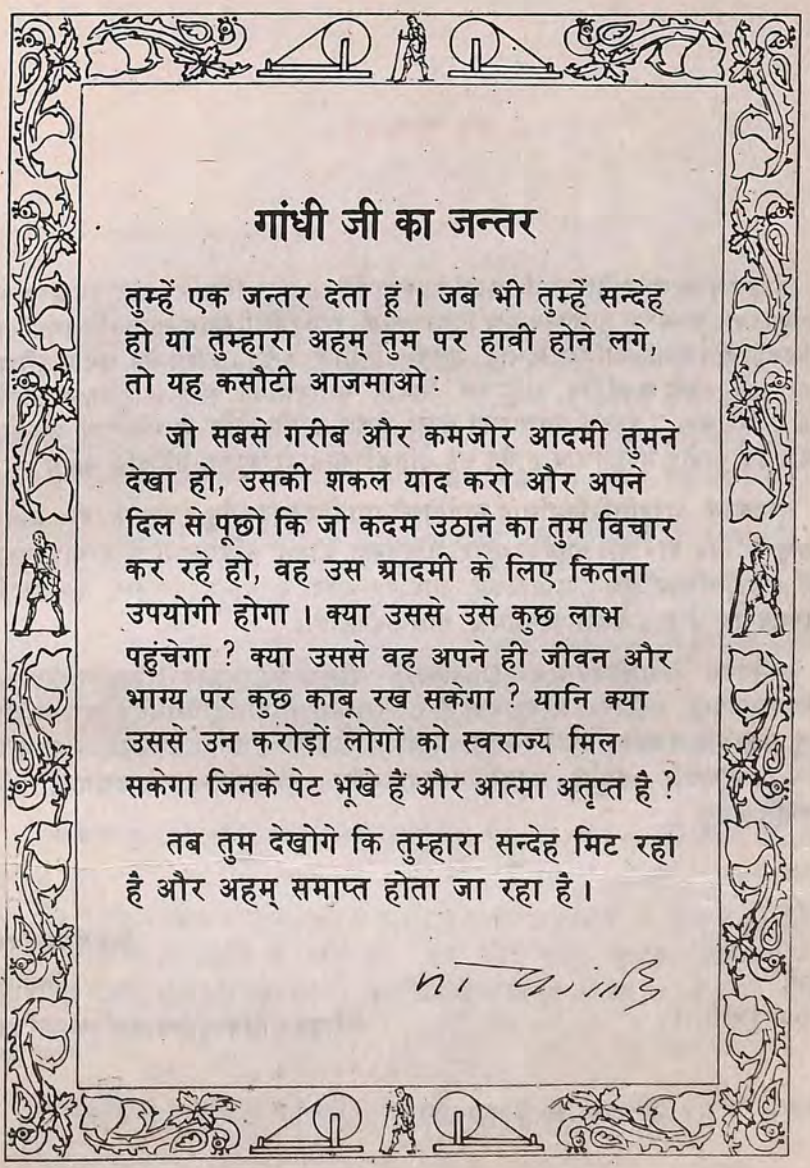

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

म. गांधी

प्रस्तावना

संस्कृतम् अस्माकं विद्यालयशिक्षायां महत्त्वपूर्णम्। अतएव विद्यालये संस्कृतम् अध्यापयितुम् उपयुक्तपाठ्यक्रमस्य पुस्तकानाञ्च निर्माणकार्यं राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषदः सामाजिकविज्ञानमानविकीशिक्षाविभागे सततं गतिशीलं वर्तते। तस्मिन्नेव क्रमे प्रारम्भिककक्षाभ्यः राष्ट्रियमेकं चतुर्वर्षीयं पाठ्यक्रमं निर्माय स्वस्तिनामकं संस्कृतपाठ्यपुस्तकं प्रणीतं यस्यायं प्रथमो भागः। पुस्तकं यथासम्भवं सरलं रोचकं छात्रोपयोगि च भवेत्तदर्थं प्रयत्नोऽत्र विहितः। इदं छात्रेषु संस्कृतभाषाज्ञानेन सह नैतिकविकासायोपकारकं भवेदिति ध्येयम्।

पुस्तकस्य पाण्डुलिपिनिर्माणाय कार्यगोष्ठीसमायोजनादिकर्मसु कृतश्रमाः प्रो० अनिलविद्यालङ्कारः डा० मा० गो० चतुर्वेदी खुंगरोपाधियुक्ता श्रीमती उर्मिलाख्या च अस्माकं धन्यवादार्हाः।पाण्डुलिपिसमीक्षणगोष्ठ्यादिकम् आयोज्य अस्य वर्तमानरूपप्रदानाय प्रकाशनादिकार्यसम्पादनाय च डा० कमलाकान्तमिश्रः साधुवादमर्हति।

पुस्तकस्य कलानिर्देशनाय (Dummy) श्रीचन्द्रकुमारवाजपेयी चित्रनिर्माणाय च श्री केशवचन्द्रवाघ महोदयः धन्यवादमर्हतः। पुस्तकस्य निर्माणसमीक्षादिषु परामर्शादिकं प्रदातॄन् संस्कृतशिक्षकान् विषयविशेषज्ञांश्च प्रति परिषदियं कृतज्ञतां प्रकटयति। छात्रेभ्यः पुस्तकम् उपयुक्ततरं कर्तुम् अनुभविनामध्यापकानां विशेषज्ञानाञ्च परामर्शाः सदैव स्वागतार्हाः भवेयुः।

शिवकुमारमिश्रः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

नवदेहली
तिथिः 3·6·1980 ई०

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ में संस्कृत भाषा का स्थान विशिष्ट महत्त्व का माना गया है। भारत की अनेक भाषाओं में संस्कृत शब्दों का प्राचुर्य इस तथ्य को प्रकट करता है कि संचार सूत्र का काम संस्कृत भाषा निर्बाध रूप से करती रही है। हमारे प्राचीन मनीषियों के ज्ञानानुभव वेद, उपनिषद्, पुराण व अन्यान्य साहित्यिक कृतियों के माध्यम से संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित हैं। अतः भारतीय संस्कृति की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि और प्रसार में संस्कृत भाषा का ज्ञान और अध्ययन वर्तमान शिक्षा-पद्धति में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

विद्यालय स्तर पर संस्कृत के शिक्षण को प्रासंगिक अपेक्षाओं के अनुकूल राष्ट्रीय चेतना के विकास व साँस्कृतिक मूल्यों के प्रचार हेतु स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुरूप संस्कृत पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की योजना राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वाधान में प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग द्वारा चार पुस्तकों का निर्माण किया जा रहा है, जो विद्यालय स्तर पर पाठ्य-क्रम के अनुरूप हों। इस क्रम की प्रथम तीन पुस्तकों में छात्रों को संस्कृत भाषा का परिचय व ज्ञान कराना प्रमुख उद्देश्य माना गया है, और इस क्रम को अन्तिम पुस्तक में संस्कृत साहित्य की विधाओं का परिचयात्मक ज्ञान देना प्रमुख लक्ष्य माना गया है।

इन चार पुस्तकों का निर्माण इस आशा और विश्वास के साथ किया जा रहा है कि विद्यालय स्तर पर चार वर्ष के अध्ययन के उपरान्त छात्र भारतीय संस्कृति की स्रोत संस्कृत भाषा और उसके साहित्य के अनुशीलन में अपेक्षित सामान्य क्षमता से सम्पन्न हो सकेगा। इस परिचयात्मक पृष्ठभूमि के साथ इस क्रम की प्रथम पुस्तक **स्वस्ति भाग I** (सु+अस्ति अर्थात् सुन्दर अस्तित्त्वमय) आपके सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है।

स्वस्ति भाग I

इस पुस्तक के निर्माण में यह ध्यान में रखा गया है कि भाषा के रूप में छात्रों को

संस्कृत से परिचयात्मक ज्ञान प्राप्त हो और साथ ही छात्रों में संस्कृत वाचन एवं लेखन तथा सरल संस्कृत वाक्यों को समझने व बोलने की क्षमता का विकास हो सके। भाषा व निम्न बिन्दुओ का प्रस्तुत पुस्तक में रोचक विधि से निर्वाह करने का यत्न किया गया है।

1. संस्कृत शब्दों का शुद्ध उच्चारण,
2. संस्कृत वाक्यों का शुद्ध लेखन,
3. सरल संस्कृत वाक्यों की रचना द्वारा अभिव्यक्ति,
4. आधारभूत व्याकरण बिन्दुओं का परिचय,
5. संस्कृत वाक्यों का मातृभाषा में अनुवाद।

उपर्युक्त बिन्दुओं के निर्वाह हेतु संस्कृत के स्वीकृत पाठ्यक्रमानुसार निम्नलिखित विषयों को पुस्तक के पाठों का आधार बनाया गया है—

1. वचन, पुरुष लिंग
2. अकारान्त पुं० एवं नपुं० व आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के विभक्ति-रूपों का परिचय, व कारकों का प्रयोग,
3. पुरुष वाची सर्वनाम, संख्यावाची शब्द
4. अकारान्त विशेषण, अव्यय, प्रत्यय
5. कुछ प्रमुख धातुओं के प्रयोग, लट् लृट् लोट् लङ्

संस्कृत के अध्यापन और प्रसार का दायित्व ऋषि-मुनि परम्परा द्वारा वर्तमान विद्यालयों के शिक्षक बन्धुओं पर आया है, और अध्यापन की सफलता उनके प्रयासों पर ही निर्भर करती है। सफल अध्यापन छात्रों की पाठों में रुचि पर भी बहुत अधिक निर्भर करता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए पाठों की भाषा सरल व प्रस्तुतीकरण रोचक बनाये रखने का प्रयास किया गया है। यह आशा की जाती है कि छात्रों द्वारा वाचन व लेखन के आवृत्ति, अभ्यासों से शिक्षक बन्धु संस्कृत शिक्षण के अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति में अपनी अमूल्य भूमिका का सहज निर्वाह कर सकेंगे।

विषय-सूची

	पृष्ठाङ्काः
प्रस्तावना	iii
आमुख	v
वन्दना	1
प्रथमः पाठः	2
द्वितीयः पाठः	5
तृतीयः पाठः	8
चतुर्थः पाठः	12
पञ्चमः पाठः	15
षष्ठः पाठः	18
सप्तमः पाठः	22
अष्टमः पाठः	25
नवमः पाठः	28
दशमः पाठः	31
एकादशः पाठः	35

द्वादशः पाठः		38
त्रयोदशः पाठः		41
चतुर्दशः पाठः	नीतिश्लोकाः	43
पञ्चदशः पाठः	जन्तुशाला	46
षोडशः पाठः	मूर्खं वानरकथा	49
सप्तदशः पाठः	सिंह शशककथा	51
अष्टादशः पाठः	दीपावलि	55
एकोनविंशः पाठः	धूर्तशृगालः	57
विंशः पाठः	सिद्धार्थः	60
एकविंशः पाठः	दशमः त्वम् असि	63
द्वाविंशः पाठः	सुभाषितानि	66
परिशिष्टम्	शब्दकोशः	68

वन्दना

असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।

भावार्थ

हे ईश्वर ! मुझे कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर ले जाएँ ।
अज्ञान रूपी अन्धकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाएँ ।
मृत्यु से अमरता की ओर ले जाएँ ।

प्रथमः पाठः

बालकः पठति ।

बालकाः पठन्ति ।

नरः पठति ।
सः पठति ।

नराः पठन्ति ।
ते पठन्ति ।

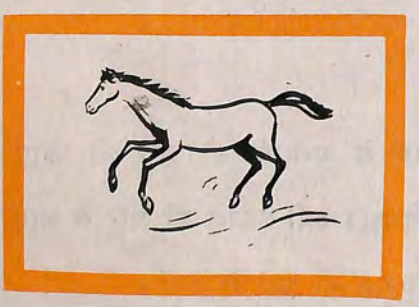

अश्वः धावति

अश्वाः धावन्ति

नरः लिखति ।

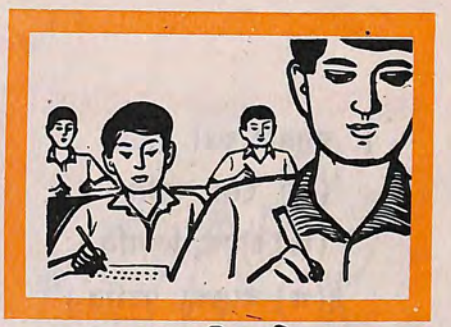

नराः लिखन्ति ।

सः लिखति ।

ते लिखन्ति ।

शब्दार्थ

बालकः	(एक) लड़का
बालकाः	(बहुत से) लड़के
नरः	(एक) मनुष्य
नराः	(बहुत से) मनुष्य
ते	वे सब
धावति	दौड़ता है
पठति	पढ़ता है

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) रामः पठति ।
(ख) श्यामः लिखति ।
(ग) बालकाः पठन्ति ।
(घ) ते लिखन्ति ।
(ङ) सः पठति ।
(च) नराः धावन्ति ।

2. रिक्त स्थान भरो—

(क) ..... पठति ।
(ख) नराः ..... ।
(ग) सः ..... ।
(घ) बालकः ..... ।
(ङ) ..... लिखन्ति ।
(च) ..... लिखति ।

3. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) मोहन पढ़ता है ।
(ख) लड़के लिखते हैं ।
(ग) वह पढ़ता है ।
(घ) वे लिखते हैं ।

द्वितीयः पाठः

बालिका क्रीडति ।

बालिकाः क्रीडन्ति ।

छात्रा लिखति ।
सा लिखति ।

छात्राः लिखन्ति ।
ताः लिखन्ति ।

सुधा हसति ।
सा हसति ।

बालिकाः हसन्ति ।
ताः हसन्ति ।

रमा पठति ।
सा पठति ।

रामः पठति ।
सः पठति ।

बालिकाः धावन्ति।
ताः धावन्ति।

बालकाः धावन्ति।
ते धावन्ति।

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) बालिका पठति ।
(ख) छात्रा क्रीडति ।
(ग) सा पचति ।
(घ) ताः क्रीडन्ति ।
(ङ) सुधा पठति ।
(च) बालिकाः हसन्ति ।

2. रिक्त स्थान भरो—

(क) बालिका ..... ।
(ख) ..... क्रीडति ।
(ग) छात्राः ..... ।
(घ) ..... पठति ।
(ङ) रमा ..... ।
(च) ..... हसन्ति ।
(छ) राधा ..... ।
(ज) प्रभा ..... ।

3. सः, सा, ते, ताः—में से सही पद का प्रयोग करते हुए खाली स्थान भरो—

(क) सुधा पचति ।
..... पचति ।
(ख) बालिका वदति ।
..... वदति ।
(ग) रामः हसति ।
..... हसति ।
(घ) बालकः क्रीडति ।
..... क्रीडति ।
(ङ) छात्राः वदन्ति ।
..... वदन्ति ।
(च) बालकाः क्रीडन्ति ।
..... क्रीडन्ति ।

फलम् पतति ।
तत् पतति ।

फलानि पतन्ति ।
तानि पतन्ति ।

कमलम् विकसति ।
तत विकसति ।

कमलानि विकसन्ति ।
तानि विकसन्ति ।

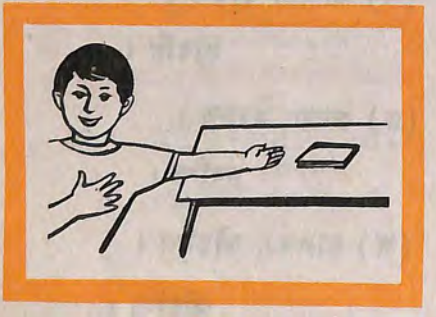

तत् मम पुस्तकम् ।

तानि मम पुस्तकानि ।

तृतीयः पाठः

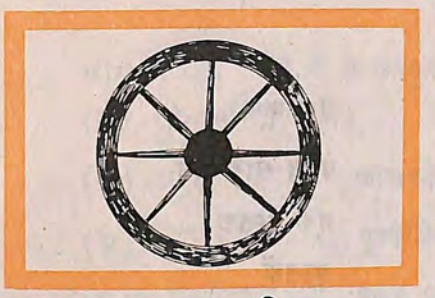

चक्रम् चलति ।
तत चलति

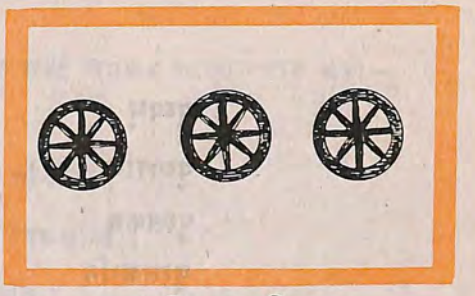

चक्राणि चलन्ति ।
तानि चलन्ति ।

सः तव कुक्कुरः ।
तानि पुष्पाणि विकसन्ति ।
तानि पत्राणि पतन्ति ।

सा तव माला ।
तत् चक्रम् चलति ।
तत् पत्रम् पतति ।

ते मम अश्वाः ।

सः मम शुकः ।

अभ्यास

पुष्पम्	एक फूल
पुष्पाणि	बहुत सारे फूल
पुस्तकम्	एक पुस्तक
पुस्तकानि	पुस्तकें
चक्रम्	पहिया
चक्राणि	पहिये
कुक्कुरः	कुत्ता
अश्वाः	घोड़े
शुकः	तोता

शब्दार्थ

1. रेखांकित पदों को उपयुक्त सर्वनाम द्वारा बदलो—

(क) फलम् पतति ।	तत्	पतति ।
(ख) बालिकाः हसन्ति ।	.....	हसन्ति ।
(ग) कमलानि विकसन्ति	.....	विकसन्ति ।
(घ) नरः चलति ।	.....	चलति ।
(ङ) अश्वाः धावन्ति ।	.....	धावन्ति ।
(च) छात्रा पठति ।	.....	पठति ।

2. कोष्ठ में दिये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर खाली स्थान भरो—
(तत्, सा, तानि, सः, ते)

(क) ..... बालकाः क्रीडन्ति ।

(ख) ..... पुष्पाणि विकसन्ति ।

(ग) ..... पत्रम् पतति ।

(घ) ..... तव अश्वः ।

(ङ) ..... मम माला ।

ध्यान दो—

संस्कृत में संज्ञा तथा सर्वनाम शब्द तीन लिंगों में होते हैं—पुंल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग ।

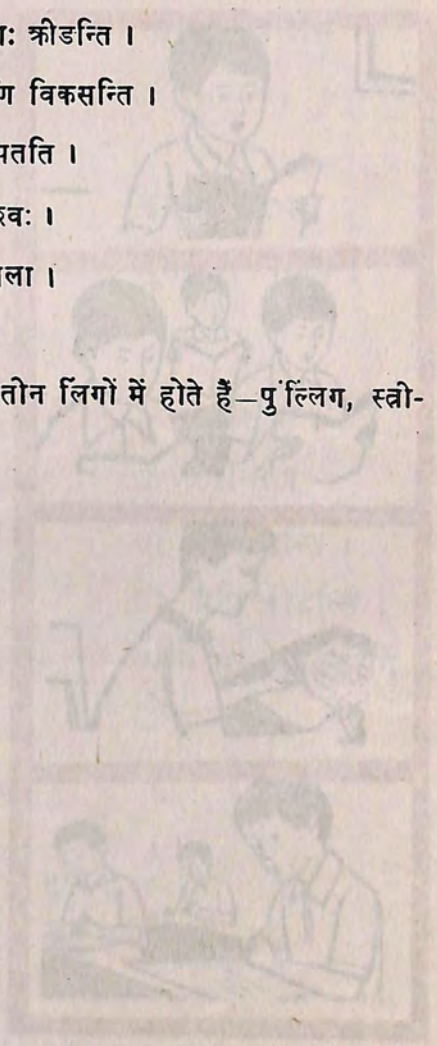

चतुर्थः पाठः

त्वम् पठसि ।

यूयम् पठथ ।

त्वम् लिखसि ।

यूयम् लिखथ ।

बालकः पठति ।
बालिका न पठति ।
सः चलति ।
सः न चलति ।
तत् मम पुस्तकम् ।

त्वम् क्रीडसि ।
त्वम् न चलसि ।

यूयम् क्रीडथ ।
यूयम् न खादथ ।

यूयम् क्रीडथ ।
ते क्रीडन्ति ।
ताः न क्रीडन्ति ।
ताः अपि क्रीडन्ति ।
तानि मम पुस्तकानि

शब्दार्थ

त्वम्	तुम, तू
यूयम्	तुम सब
अपि	भी
न	नहीं

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) त्वम् पचसि ।
(ख) त्वम् धावसि ।
(ग) यूयम् खादथ ।
(घ) त्वम् खादसि ।
(ङ) यूयम् पचथ ।
(च) यूयम् पठथ ।

2. खाली स्थान भरो—

(क) ..... पठसि ।
(ख) यूयम् ..... ।
(ग) ..... क्रीडथ ।
(घ) ..... विकसन्ति ।
(ङ) ..... न लिखति ।
(च) ते ..... ।

3. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) तू हँसता है ।
(ख) तुम सब खेलते हो ।
(ग) राम पढ़ता है ।
(घ) श्याम भी पढ़ता है ।
(ङ) लता खेलती है ।

पञ्चमः पाठः

अहम् पठामि ।

वयम् पठामः ।

अहम् लिखामि ।

वयम् लिखामः ।

अहम् पचामि ।

अहम् गच्छामि ।

वयम् पिबामः ।

अहम् अत्र पठामि ।

यूयम् कुत्र गच्छथ ?

ते बालकाः तत्र क्रीडन्ति ।

वयम् पचामः ।

सः न गच्छति ।

ते अपि पिबन्ति ।

त्वम् अत्र क्रीडसि ।

वयम् तत्र गच्छामः ।

ताः छात्राः तत्र लिखन्ति ।

शब्दार्थ

तत्र	वहाँ
अत्र	यहाँ
कुत्र	कहाँ

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) सः चलति ।
(ख) त्वम् चलसि ।
(ग) अहम् चलामि ।
(घ) ते चलन्ति
(ङ) यूयम् चलथ ।
(च) वयम् चलामः ।

2. ऊपर दिए गए वाक्यों में चल् धातु के स्थान पर क्रीड्, धाव्, खाद् और गम् (गच्छ) धातुओं के रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाओ ।

3. नीचे दिए गए तीनों वर्गों में से एक-एक शब्द चुनकर अधिक से अधिक वाक्य बनाओ ।

अहम्	अत्र	पठथ
वयम्	तत्र	हससि
त्वम्	कुत्र	नमामि
यूयम्	अपि	खादन्ति
ते	न	क्रीडामः
ताः		गच्छन्ति

4. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) मैं यहाँ पढ़ता हूँ ।
(ख) हम सब वहाँ जाते हैं ।
(ग) लड़कियाँ भागती है ।
(घ) लता नमस्कार करती है ।

षष्ठः पाठः

रामः श्याम ! त्वम् कुत्र गच्छसि ?

श्यामः अहम् उद्यानम् गच्छामि ।

रामः मोहन ! त्वम् किम् लिखसि ?

मोहनः अहम् पत्रम् लिखामि ।

रामः ताः कन्याः किम् पश्यन्ति ?

श्यामः ताः कन्याः चित्रम् पश्यन्ति ।

श्यामः तव पुस्तकम् कुत्र अस्ति ?

रामः मम पुस्तकम् अत्र अस्ति ।

श्यामः मम चित्राणि कुत्र सन्ति ?

रामः तव चित्राणि तत्र सन्ति ।

रामः गोविन्द ! किम् त्वम् रमाम् पश्यसि ?

गोविन्दः न हि, अहम् तु मोहनम् पश्यामि ।

श्यामः गोपाल ! त्वम् कुत्र गच्छसि ?

गोपालः अहम् गृहम् गच्छामि ।

रामः अहम् अपि गृहम् गच्छामि ।

शब्दार्थ

कुत्र	कहाँ
किम्	क्या
अस्ति	है
सन्ति	हैं
गम् (गच्छ)	जाना
खाद्	खाना
पच्	पकाना
तु	तो

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) छात्रः पाठशालाम् गच्छति ।
(ख) नराः चित्रम् पश्यन्ति ।
(ग) सा उद्यानम् गच्छति ।
(घ) तानि फलानि तत्र सन्ति ।
(ङ) अहम् फलम् खादामि ।
(च) प्रभा तत्र भोजनम् पचति ।
(छ) त्वम् पत्रम् लिखसि ।

2. खाली स्थान भरो—

(क) कन्याः ..... गच्छन्ति ।

(ख) अहम् ..... खादामि ।

(ग) वयम् ..... पठामः ।

(घ) त्वम् ..... लिखसि ।

(ङ) सः ..... पश्यति ।

(च) प्रभा ..... पचति ।

3. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) रमा पत्र लिखती है ।

(ख) तुम चित्र देखते हो ।

(ग) लड़के उद्यान में खेलते हैं ।

(घ) वह घर जाती है ।

(ङ) वे फल खाते हैं ।

ध्यान दो—

कर्ता	कर्म
मोहन:	मोहनम्
बालक:	बालकम्
बाला	बालाम्
कन्या	कन्याम्
चित्रम्	चित्रम्
गृहम्	गृहम्

सप्तमः पाठः

रामः तत् कस्य गृहम् ?

हरिः तत् गोविन्दस्य गृहम् ।

रामः मोहनस्य गृहम् कुत्र अस्ति ?

हरिः मोहनस्य गृहम् विद्यालयस्य समीपे अस्ति ।

रामः किम् तव विद्यालयः अति समीपे अस्ति ?

हरिः न हि, मम विद्यालयः अति दूरे अस्ति ।

रामः बालकानाम् पुस्तकानि कुत्र सन्ति

हरिः बालकानाम् पुस्तकानि अत्र सन्ति ।

रामः ते बालकाः कुत्र क्रीडन्ति ?

हरिः ते बालकाः विद्यालयस्य समीपे क्रीडन्ति ।

रामः गोपालस्य गृहम् कुत्र अस्ति ?

हरिः गोपालस्य गृहम् उद्यानस्य समीपे अस्ति ।

रामः छात्राणाम् समूहः किम् करोति ?

हरिः छात्राणाम् समूहः उद्याने क्रीडति ।

शब्दार्थ

अति समीपे	बहुत पास में
अति दूरे	बहुत दूर
करोति	करता है
कुर्वन्ति	करते हैं

रूप परिचय—

बालकः	बालकस्य	बालकानाम्
नरः	नरस्य	नराणाम्
छात्रः	छात्रस्य	छात्राणाम्
गृहम्	गृहस्य	गृहाणाम्
पुस्तकम्	पुस्तकस्य	पुस्तकानाम्

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) कुसुमानाम् माला कुत्र अस्ति ?

(ख) कुसुमानाम् माला अत्र अस्ति ।

(ग) मोहनः गोविन्दस्य गृहम् गच्छति ।

(घ) सः गोपालस्य विद्यालयः अस्ति ।

(ङ) अश्वानाम् समूहः तृणम् खादति ।

2. कोष्ठक में दिए हुए शब्दों के साथ उपयुक्त विभक्ति लगाकर खाली स्थान भरो—

(क) सः ..... अश्वः अस्ति । (रमेश)

(ख) रामः ..... पुत्रः । (गोविन्द)

(ग) ..... समीपे कूपः अस्ति । (उद्यान)

(घ) ..... समूहः कुत्र धावति ? (छात्र)

3. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) राकेश का विद्यालय दूर है ।

(ख) मेरा विद्यालय समीप है ।

अष्टमः पाठः

इदम् विद्यालयस्य उद्यानम् ।

उद्याने बालकाः विचरन्ति ।

अत्र विविधाः वृक्षाः सन्ति ।

पुष्पेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति ।

वृक्षेषु पुष्पाणि विकसन्ति ।

इयम् गंगा ।

गंगायाः जलम् शीतलम् ।

गंगायाम् नौकाः तरन्ति ।

सा गंगायाः जलम् आनयति ।

गंगायै नमः ।

अयम् तडागः ।

तडागे जलम् ।

जले कमलानि ।

कमलेषु भ्रमराः ।

शब्दार्थ

तडागः	तालाब
भ्रमरः	भौंरा
कूज्	चहचहाना
गुञ्ज	गूंजना
नौका	नाव

रूप परिचय—

तॄ	तरन्ति
वि+हृ	विहरन्ति

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) वनेषु मृगाः विचरन्ति ।

(ख) सः गृहे फलानि खादति ।

(ग) ताः बालिकाः उद्यानेषु भ्रमन्ति ।

(घ) तडागे कमलानि विकसन्ति ।

2. कोष्ठ में दिए गए शब्दों में उपयुक्त विभक्ति लगाकर वाक्य पूर्ण करो ।

(क) ..... फलानि सन्ति । (वृक्ष)

(ख) रमा ..... भोजनम् पचति । (गृह)

(ग) ..... भ्रमराः गुञ्जन्ति । (पुष्प)

(घ) ..... जलम् अस्ति । (तडाग)

(ङ) ..... चित्राणि सन्ति । (पुस्तक)

3. दिए गए उदाहरणों के अनुसार खाली स्थान भरो—

लता	लतायाम्	लतासु
वाटिका	.....	.....
कन्या	.....	.....
वृक्षः	वृक्षे	वृक्षेषु
मनुष्यः	.....	.....
पुत्रः	.....	.....
वनम्	वने	वनेषु
पुस्तकम्	.....	.....
शरीरम्	.....	.....

4. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) पेड़ों पर पक्षी रहते हैं ।

(ख) हम पाठशाला में पढ़ते हैं ।

(ग) मोहन बाग में खेलता है ।

(घ) प्रभा घर में भोजन पकाती है ।

(ङ) घर के समीप वाटिका है ।

नवमः पाठः

गोविन्दः त्वम् कुत्र गमिष्यसि ?

गोपालः अहम् उद्यानम् गमिष्यामि ।

गोविन्दः त्वम् तत्र किम् करिष्यसि ?

गोपालः अहम् तत्र क्रीडिष्यामि ।

गोविन्दः त्वम् केन सह क्रीडिष्यसि ?

गोपालः अहम् रामेण सह क्रीडिष्यामि ।

गोविन्दः गोपाल ! त्वम् केन सह उद्यानम् गमिष्यसि

गोपालः अहम् मित्रेण सह उद्यानम् गमिष्यामि ।

गोविन्दः त्वम् केन क्रीडिष्यसि ?

गोपालः अहम् कन्दुकेन क्रीडिष्यामि ।

गोविन्दः सर्वे बालकाः केन क्रीडिष्यन्ति ?

गोपालः सर्वे बालकाः कन्दुकेन क्रीडिष्यन्ति ।

शब्दार्थ

कन्दुकम्	गेंद
कलमः	कलम
सह	साथ
यानम्	सवारी
वेगः	गति
केन सह	किसके साथ (व्यक्ति)
केन	किससे (साधन)

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) बालिकाः कन्दुकेन क्रीडिष्यन्ति ।
(ख) ताः कलमेन पत्राणि लिखन्ति ।
(ग) अहम् अद्य वाटिकाम् गमिष्यामि ।
(घ) श्यामः मित्रेण सह गृहम् गमिष्यति ।
(ङ) ते रथेन ग्रामम् गच्छन्ति ।
(च) सीता केन सह वनम् गच्छति ?
(छ) यूयम् केन यानेन नगरम् गच्छथ ?

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति लगाकर रिक्त स्थान भरो—

(क) सः ..... क्रीडिष्यति । (कन्दुक)

(ख) अहम् ..... पत्रम् लिखामि । (कलम)

(ग) त्वम् ..... सह पाठशालाम् गमिष्यसि । (सुनील)

(घ) गोपालः ..... सह पठिष्यति । (सुधीर)

3. दिए गए उदाहरण के अनुसार परिवर्तन करो—

(क) रामः गच्छति । रामः गमिष्यति ।

(ख) गोपालः कृषिम् करोति । .....

(ग) छात्राः सत्यम् वदन्ति । .....

(घ) बालकाः समाचारपत्रम् पठन्ति । .....

(ङ) नराः वाटिकायाम् भ्रमन्ति । .....

(च) अश्वाः वेगेन धावन्ति । .....

4. संस्कृत में अनवाद करो

(क) श्याम राम के साथ विद्यालय जायेगा ।

(ख) मैं मित्र के साथ उद्यान में खेलूँगा ।

(ग) मीरा गेंद से खेलती है ।

(घ) छात्राएँ पाठ पढ़ेंगीं ।

दशमः पाठः

मोहनः प्रातः गृहात् विद्यालयम् गच्छति । सः तत्र अवधानेन पाठम् पठति । सः सायम् विद्यालयात् गृहम् आगच्छति ।

मार्गे तस्य मित्रस्य उद्यानम् अस्ति । सः मित्रेण सह वृक्षात् फलानि त्रोटयति ।

सः फलानि गृहम् आनयति ।

वृक्षेभ्यः पत्राणि पतन्ति ।

मोहनस्य पिता विद्यालयस्य वृत्तान्तम् पृच्छति । मोहनः विद्यालयस्य वृत्तान्तम् कथयति ।

माता कथाम् कथयति ।

मोहनस्य पिता स्तोत्रम् गायति ।

तस्य भ्राता ग्रामात् दुग्धम् आनयति । सोहनस्य पिता प्रातः गृहात् बहि गच्छति । सः सायम आपणात् आम्रफलानि आनयति ; सर्वे विनोदेन कालम नयन्ति ।

शब्दार्थ

आपणम्	दुकान
दूरम्	दूर
बहिः	बाहर
आम्रम्	आम
अवधानेन	ध्यान से
त्रोटयति	तोड़ता है
आनयति	लाता है
आगच्छति	आता है
पृच्छति	पूछता है
कथयति	कहता है
गायति	गाता है
कालम् नयति	समय बिताता है

रूप परिचय—

वृक्षम्	वृक्षात्	वृक्षेभ्यः
विद्यालयम्	विद्यालयात्	विद्यालयेभ्यः
आपणम्	आपणात्	आपणेभ्यः

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) वृक्षेभ्यः कुसुमानि पतन्ति ।

(ख) बालः आपणात् आगच्छति ।

(ग) अहम् नगरात् बहिः गमिष्यामि ।

(घ) अध्यापकः पुस्तकालयात् पुस्तकानि आनयति ।

(ङ) गोविन्दः सायम् मित्रैः सह क्रीडति ।

2 कोष्ठक में दिए गए शब्दों में सही शब्द लगाकर रिक्त स्थान भरो—

(क) सः ..... क्रीडति । (कन्दुकेन/कन्दुकात्)

(ख) मम गृहम् ..... दूरम् । (विद्यालयस्य/विद्यालयात्)

(ग) त्वम दुग्धम् ..... । (पिबति/पिबसि)

(घ) अहम् विद्यालयम् ..... । (गच्छति/गच्छामि)

(ङ) सः ..... पतति । (वृक्षस्य/वृक्षात्)

3. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) राम घर से जायेगा ।

(ख) पेड़ों से फूल गिरते हैं ।

(ग) लता गेंद से खेलती है ।

(घ) श्याम पुस्तक पढ़ता है ।

(ङ) मोहन दूध पीता है ।

(च) रमा चित्रों को देखती है ।

(छ) लड़के घरों से आते हैं ।

एकादशः पाठः

अयम् देवालयः । अत्र जनाः
पूजनाय आगच्छन्ति । बालिकाः
पूजायै पुष्पाणि आनयन्ति ।
ताः देवेभ्यः पुष्पाणि अर्पयन्ति ।
देवेभ्यः नमः । ईश्वराय नमः ।

दीपकम् प्रकाशाय भवति ।
धनम् दानाय भवति ।
सज्जनाः परोपकाराय जीवन्ति ।
परोपकारः पुण्याय भवति ।

पिता बालकाय पुस्तकम् आनयति ।
माता बालिकायै क्रीडनकम् ददाति ।
अध्यापिका छात्राभ्यः पारितोषिकम् वितरति ।
अध्यापिका छात्रेभ्यः चित्राणि दर्शयति ।

शब्दार्थ

देवालयः	मन्दिर
पूजनाय	पूजा के लिए
अर्पयन्ति	अर्पण करते हैं
परोपकारः	दूसरों का भला
पुण्याय	अच्छे काम के लिए
क्रीडनकम्	खिलौना
पारितोषिकम्	इनाम
दर्शयति	दिखाता है
जीवन्ति	जीते हैं
भवति	होता है
वितरति	बाँटता है

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) माता रामाय भोजनम् पचति ।

(ख) पिता बालकेभ्यः मोदकानि ददाति ।

(ग) ताः बालिकाः पाठशालाम् पठनाय गच्छन्ति ।

(घ) शिक्षकः छात्रेभ्यः विद्याम् ददाति ।

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में सही शब्द लगाकर खाली स्थान भरो—

(क) सः ..... जलम् आनयति। (मोहनम्/मोहनाय)

(ख) .... भोजनम् खादति। (त्वम्/सः)

(ग) मोहनः पत्रम् .... । (लिखसि/लिखति)

(घ) जनक : .... मोदकानि ददाति। (बालेभ्यः/बालान्)

(ङ) सा मणाय तत्र .... । (गच्छसि/गच्छति)

3. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) राम मोहन को पुस्तक देता है।

(ख) रमा कलम से पत्र लिखती है।

(ग) वह शाम को भोजन के लिए आता है।

(घ) पेड़ों मे पत्ते गिरते हैं।

(ङ) हम पढ़ने के लिए विद्यालय जाते हैं।

द्वादशः पाठः

अध्यापकः छात्रान् श्लोकम् पाठयति ।

छात्राः श्लोकम् पठन्ति ।

बालिकाः पुष्पेभ्यः शाखाम् नमयन्ति ।

ताः पुष्पैः मालाः रचयन्ति ।

बालकाः उद्यानात् पुष्पाणि आनयन्ति ।

ते अध्यापकेभ्यः पुष्पाणि अर्पयन्ति ।

सर्वे छात्राः अध्यापकैः सह राष्ट्रगीतम् गायन्ति ।

अश्वः पादैः धावति ।

मृगाः मृगैः सह चरन्ति ।

बालकाः बालिकाभिः सह पठन्ति ।

मालाकारः मालाभिः मण्डपम् भूषयति ।

सर्वे तत्र उत्सवम् रचयन्ति ।

शब्दार्थ

शाखा	टहनी
मृगः	हिरण
मालाकारः	माली, माला बनाने वाला
रचयन्ति	बनाते हैं
अर्पयन्ति	अर्पित करते हैं
पाठयति	पढ़ाता है
उत्सवम् रचयन्ति	उत्सव मनाते हैं

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) माता पुत्राय दुग्धम् ददाति ।

(ख) अहम् रामेण सह तत्र गमिष्यामि ।

(ग) बालकाः कन्दुकेन उद्याने क्रीडन्ति ।

(घ) कन्याः उद्यानात् पुष्पाणि आनयन्ति ।

(ङ) ते विहाराय उद्यानम् गच्छन्ति ।

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द लगा कर खाली स्थान भरो—

(क) बालकाः..... सह धावन्ति । (बालकैः बालकेभ्यः)

(ख) ..... चित्राणि पश्यन्ति । (वयम्/ते)

(ग) सः ..... पाठशालाम् गच्छति । (पठने/पठनाय)

(घ) अश्वः ..... धावति । (पादेन/पादैः)

3. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) लड़के लड़कियों के साथ लिखते हैं ।

(ख) राम मोहन के साथ विद्यालय जाता है ।

(ग) लता पुस्तक पढ़ती है ।

(घ) लड़कियाँ चित्र देखती हैं ।

त्रयोदश. पाठः

माता गोविन्द, इदानीम् त्वम् किम् करोषि ?

गोविन्दः मातः ! मोहनेन सह क्रीडामि ।

माता रामः किम् करोति ?

गोविन्दः रामः अपि अत्र क्रीडति ।

माता अलम् क्रीडया, त्वम् अत्र आगच्छ, मोहनम् रामम् च आनय ।

गोविन्दः वयम् सर्वे एव आगच्छामः ।

माता आगच्छत, अत्र आसने उपविशत ।पात्रेषु उष्णम् दुग्धम् अस्ति । दुग्धम पिबत । दुग्धम् शरीरस्य पोषणाय भवति । इमानि फलानि । फलानि खादत । फलानि अपि शरीरम् पोषयन्ति ।

शब्दार्थ

पोषयति	पोषण करता है ।
अलम् क्रीडया	मत खेलो
इदानीम्	अब
उष्णम्	गर्म
दुग्धम्	दूध
जीव्	जोना

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) शेखर ! त्वम् उत्तमानि पुस्तकानि पठ ।

(ख) बालकः ! यूयम् चित्राणि लिखत ।

(ग) यूयम् क्रीडाक्षेत्रे क्रीडत ।

(घ) सत्यम् वद ।

2. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) सदा सत्य बोलो ।

(ख) स्वच्छ पानी पियो ।

(ग) राजीव, पाठ पढ़ो ।

(घ) पत्र लिखो ।

(ङ) राम, तुम गाँव जाओ ।

(च) मोहन, तुम दूध लाओ ।

चतुर्दशः पाठः

नीतिश्लोकाः

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम् ॥ १ ॥

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥ २ ॥

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥ ३ ॥

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ४ ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

अभिवादनशीलस्य	नमस्कार करने वाले के
वृद्धोपसेविनः	वृद्धों की सेवा करने वाले के
वर्धन्ते	बढ़ते हैं
अलसस्य	आलसी का
कुतः	कहाँ
अविद्यस्य	विना विद्या वाले का
अधनस्य	धनहीन का
अमित्रस्य	मित्रहीन का
उद्यमेन	परिश्रम
हि	निश्चय
सिध्यन्ति	सफल होते हैं
मनोरथैः	इच्छा मात्र से
सुप्तस्य	सोये हुए के
प्रविशन्ति	घुसते हैं
मृगाः	पशु, हरिण (हिरन)
लघुचेतसाम्	छोटे विचार वाले
गणना	गिनती
उदारचरितानाम्	विशाल हृदय वाले
वसुधा	पृथ्वी, धरती
कुटुम्बकम्	परिवार
निरामयाः	नीरोग
भद्राणि	कल्याण

कश्चिद्	कोई
दुःखभाग्	दुखी, दुखका भागी

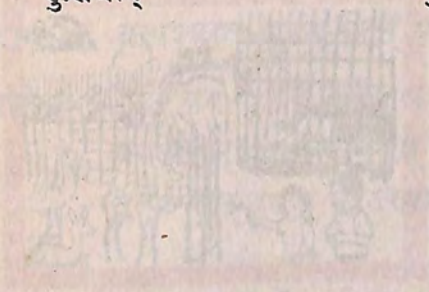

पञ्चदशः पाठः
जन्तुशाला

रामः रहीम ! ह्यः त्वम् कुत्र अगच्छः ?

रहीमः अहम् जन्तुशालाम् अगच्छम् ।

रामः त्वम् केन सह तत्र अगच्छः ?

रहीमः अहम्, राकेशेन सह तत्र अगच्छत् ।

रामः किम् तव भ्राता अपि त्वया सह तत्र अगच्छत् ।

रहीमः आम् मम भ्राता अपि मया सह तत्र अगच्छत् ।

रामः यूयम् सर्वे केन यानेन अगच्छत ?

रहीमः वयम् 'मोटर-यानेन' तत्र अगच्छाम ?

रामः जन्तुशालायाम् यूयम् किम् अपश्यत ?

रहीमः वयम् तत्र देशविदेशानाम् अनेकान् पशून् खगान् सर्वान् च अपश्याम । जन्तुशालायाम् सिंहाः, गजाः, मृगाः, जलहस्ती, भल्लूकादयः पशवः आसन् । तत्र एका सिंही अपि आसीत् । तस्याः शावकाः तत्र अक्रीडन् । तत्र तडागे वयम् मकरान् अपि अपश्याम ।

जन्तुशालायाम् बहवः वानराः अपि आसन् । ते वृक्षाणाम् शाखासु अकूर्दन् ।

रामः तत्पश्चात् यूयम् किम् अकुरुत ?

रहीमः तदा वयम् सर्वे अति श्रान्ताः । वयम् जलपानगृहम् अगच्छाम्, तत्र च वयम् शीतलं पेयम् अपिबाम । तत्पश्चात् वयम् मोटरयानेन स्वगृहम् प्रत्यागच्छाम ।

शब्दार्थ

ह्यः	कल (बीता हुआ)
भगिनी	बहन
मकरः	मगरमच्छ
गजाः	हाथी
शावकाः	पशु पक्षी के बच्चे
तडागः	तालाब
तत्पश्चात्	उसके बाद
श्रान्ताः	थके हुए
भल्लूकः	भालू
प्रत्यागच्छाम	वापस आ गए

रूप परिचय—

सः अगच्छत्	ते अगच्छन्
त्वम् अगच्छः	यूयम् अगच्छत
अहम् अगच्छम्	वयम् अगच्छाम ।

पठ्, लिख् और पिब् धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाओ ।

अभ्यास

1. अनुवाद करो—

(क) रमा पुस्तकम् अपठत् ।

(ख) ते चित्राणि अपश्यन् ।

(ग) माता भोजनम् अपचत् ।

(घ) त्वम् ह्यः पाठशालाम् अगच्छः ।

(ङ) अहम् पूजनाय मन्दिरम् अगच्छम् ।

(च) यूयम् उद्याने अक्रीडत ।

(छ) वयम् दुग्धम् अपिबाम ।

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुन कर रिक्त स्थान में भरो—

(क) बालाः पठनाय पाठशालाम् ..... । (अगच्छः/अगच्छन्)

(ख) पिता पुत्राय मोदकानि ..... । (आनयन्/आनयत्)

(ग) ते दुग्धम् ..... । (अपिबत्/अपिबन्)

(घ) किम् त्वम् मोदकम् ..... । (अखादत्/अखादः)

(ङ) यूयम् दुग्धम् ..... । (अपिबत/अपिबम्)

(च) अहम् उद्यानम् ..... । (अगच्छ/अगच्छम्)

(छ) वयम् चित्राणि ..... । (अपश्यत्/अपश्याम)

ध्यान दो—

सस्कृत में सह के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है ।

राम के साथ	रामेण सह ।
सीता के साथ	सीतया सह ।
बालकों के साथ	बालकैः सह ।
मेरे साथ	मया सह ।
तुम्हारे साथ	त्वया सह ।

षोडशः पाठः

मूर्खवानरकथा

नर्मदातीरे एकः वृक्षः आसीत्। तत्र स्वपरिश्रमेण निर्मितेषु नीडेषु खगाः सुखेन वसन्ति स्म। तत्र वृक्षतले कश्चित् वानरः अपि वसति स्म। एकदा महती वृष्टिः अभवत्। सः वानरः वृष्टिजलेन अतीव आर्द्रः कम्पितः च अभवत्। खगाः शीतेन कम्पमानम् वानरम् अवदन्—"भो वानर! त्वम् कष्टम् अनुभवसि। तत् कथम् गृहस्य निर्माणम् न करोषि।" यदा सः वानरः एतत् अशृणोत् तदा सः अचिन्तयत्—"अहो! एते क्षुद्राः खगाः माम् निन्दन्ति। अतः सः वानरः खगानाम् नीडानि वृक्षात् अधः अपातयत्। खगानाम् नीडैः सह तेषाम् अण्डानि अपि नष्टानि।

उक्तम् हि यथा—"उपदेशो हि मूर्खाणाम् प्रकोपाय न शान्तये।'

शब्दार्थ

रूप परिचय—

नीडम्

आर्द्र

घोसला

गीला

अधः	नीचे
वसति स्म	रहता था
क्षुद्राः खगाः	छोटे पक्षी
कम्पमानम्	काँपते हुए
वृष्टिः	बर्षा

रूप परिचय—

शृणोति	अशृणोत्
चिन्तयति	अचिन्तयत्
पातयति	अपातयत्

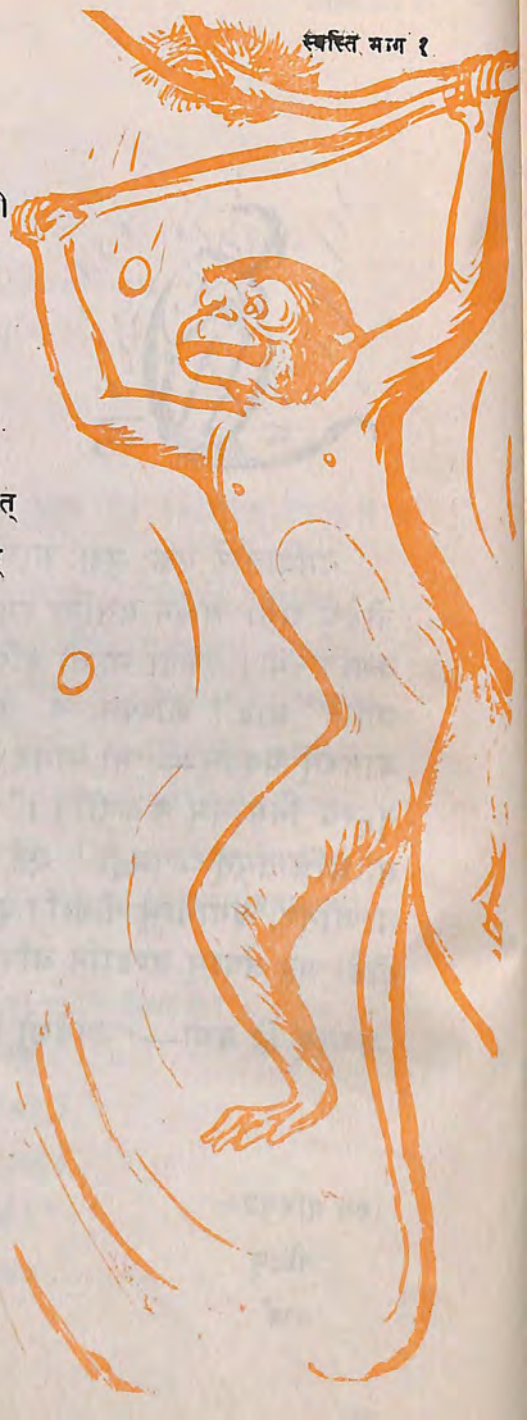

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों में क्रिया पद भरो—

(क) नीडेषु खगाः .....।

(ख) वानरः वृक्षतले .....।

(ग) रामः ह्यः मम गृहम् .....।

(घ) पशवः क्षेत्रे .....।

2. अनुवाद करो—

(क) मोहन ने दूध पिया।

(ख) सब छात्र विद्यालय गये।

(ग) तू कल कहाँ गया था ?

(घ) तुम सबने हाँ क्या देखा ?

(ङ) हम सब उद्यान में गेंद से खेले।

सप्तदशः पाठः

सिंह-शशककथा

मन्दरपर्वते दुर्दान्तः नाम सिंहः वसति स्म। सः च सर्वदा बहूनाम् पशूनाम् वधम् करोति स्म। एकदा सर्वे पशवः सिंहस्य समीपम् अगच्छन् अवदन् च—मृगेन्द्र! त्वम् किमर्थम् सर्वदा पशूनाम् वधम् करोषि? प्रसीद। वयम् स्वयम् तव भोजनाय प्रतिदिनम् एकम् पशुम् प्रेषयिष्यामः।

ततः सिंहः अवदत्—"यदि यूयम् एवम् इच्छथ, तर्हि भवतु तत्।" ततः प्रभृति एकः पशुः प्रतिदिनम् क्रमेण सिंहस्य समीपम् गच्छति स्म।

एकदा एकस्य शशकस्य वारः समायातः। सः अचिन्तयत्—'यदि मम मरणम् निश्चितम् एव, तर्हि मन्दम् एव गच्छामि'। सः अतिविलम्बेन सिंहस्य समीपम् अगच्छत्।

तत्र सिंहः तु क्षुधया अतिपीडितः आसीत्। अतिक्रुद्धः सः शशकम् अपृच्छत्, "त्वम् विलम्बात् कुतः आगच्छः?" शशकः विनयेन अवदत्—"महाराज! न मम दोषः। मार्गे अपरः सिंहः आसीत्, सः माम् अपश्यत् अवदत् च, "अहम् अस्य वनस्य राजा। अहम् त्वाम् भक्षयिष्यामि।" अहम् तम् अवदम् अस्य वनस्य राजा तु दुर्दान्तः नाम सिंहः अस्ति।

सः अद्य माम् भक्षयिष्यति। अहम् अधुना तस्य भोजनाय गच्छामि। एतत् श्रुत्वा सः सिंहः अतिक्रुद्धः अभवत्। अहम् अत्र पुनः आगमिष्यामि' इति शपथं कृत्वा अत्र आगच्छम्।

दुर्दान्तः क्रोधेन अवदत्—'रे शठ! कुत्र अस्ति सः अपरः सिंहः? तम् सत्वरम् माम् दर्शय। शशकः सिंहम् एकस्य गंभीरस्य कूपस्य समीपम् अनयत् अकथयत् च—"पश्यतु महाराज! अस्मिन् कूपे एव सः सिंहः वसति।"

तस्य कूपस्य जले दुर्दान्तः स्व प्रतिबिम्बम् अपश्यत् अवदत् च —'अयम् एव सः सिंहः?' क्रोधेन परिपूर्णः सः दुर्दान्तः आत्मानं कूपे अक्षिपत् पञ्चत्वम् च अगच्छत्।

उक्तम् हि यथा—

बुद्धिर्यस्य बलम् तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।
पश्य सिंहो मदोन्मत्तः शशकेन निपातितः॥

शब्दार्थ

तव	तुम्हारा
युष्माकम्	तुम लोगों का
प्रेषयिष्यामः	भेजेंगे
कुतः	किस कारण से
अपरः	दूसरा

सत्वरम्	जल्दी
निर्बुद्धेः	बुद्धिरहित
निपातितः	गिराया गया
पञ्चत्वम् अगच्छत्	मृत्यु को प्राप्त हुआ
इति	उद्धरण की समाप्ति का सूचक
क्षुधया	भूख से
प्रसीदतु भवान्	आप कृपा करें
अग्रं	सामने
मन्दम् मन्दम्	धीरे धीरे
शठ	दुष्ट

अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में दो—

(क) दुर्दान्तः कुत्र अवसत् ?

(ख) शशकः तम् कुत्र अनयत् ?

(ग) सिंहः कूपे किम् अपश्यत् ?

(घ) तदा सः किम् अकरोत् ?

2. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) शेर वन में रहता था।

(ख) शेर प्रतिदिन एक जानवर को खाता था।

(ग) सब जानवर शेर के पास गये।

(घ) खरगोश बहुत चतुर था।

(ङ) खरगोश शेर को कुएँ के पास ले गया।

(च) शेर ने कुएँ में अपनी परछाई देखी।

अष्टादशः पाठः

दीपावलि

भारतवर्षस्य उत्सवेषु दीपावल्याः उत्सवः अतीव रम्यः । अस्य उत्सवस्य विषये एका कथा प्रचलिता । जनाः कथयन्ति यत् पुरा रावणेन सह श्रीरामचन्द्रस्य युद्धम् अभवत् । तस्मिन् युद्धे श्रीरामचन्द्रः रावणम् अजयत् । सीतया लक्ष्मणेन च सह श्रीरामचन्द्रः अयोध्याम् प्रत्यागच्छत् । तदा अयोध्यायाः जनाः अतीव प्रसन्नाः अभवन् । ते श्रीरामचन्द्रस्य विजयोत्सवे स्वानि गृहाणि दीपमालाभिः आलोकयन् । ततः प्रभृति प्रतिवर्षम् तस्मिन् एव दिने दीपावल्याः उत्सवः भवति ।

दीपावल्याः दिवसे जनानां हृदयेषु महान् उल्लासः भवति । सर्वे जनाः गृहाणि भूषयन्ति । ते बालकेभ्यः प्रसन्नतया क्रीडनकानि मिष्टान्नानि च आनयन्ति । जनाः स्वमित्रेभ्यः मिष्टान्नानि प्रेषयन्ति । सन्ध्यायाम् जनाः असङ्ख्यानाम् दीपानाम् आवली रचयन्ति । रात्रौ जना लक्ष्मीं पूजयन्ति । अहो ! रमणीय अयं प्रकाशोत्सव ।

शब्दार्थ

रम्यः	सुन्दर
अजयत्	जीता
स्वानि	अपने
उल्लासः	हर्ष-आनन्द
आवलिः	पंक्ति
क्रीडनकानि	खिलौने
मिष्टान्नानि	मिठाइयाँ
पूजयन्ति	पूजा करते हैं
आनयन्ति	लाते हैं
तस्मात् दिनात्	उस दिन से
प्रेषयन्ति	भेजते हैं

अभ्यास

खाली स्थान भरो—

(क) दीपावल्याः उत्सवः अतीव ..... अस्ति ।

(ख) जनानाम् हृदयेषु ..... भवति ।

(ग) जनाः गृहाणि ..... ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) दीवाली के त्यौहार को सब लोग उत्साह से मनाते हैं ।

(ख) बच्चे खिलौने से खेलते हैं ?

(ग) सब लोग मिठाई खाते हैं ।

(घ) रात में लक्ष्मी की पूजा करते हैं ।

एकोनविंशः पाठः

धूर्तशृगालः

एकदा एकः काकः अतीव बुभुक्षितः अभीत् । सः भूमौ एकं मांसखण्डम् अपश्यत् । सः तं मांसखण्डम् गृहीत्वा वृक्षस्य शाखायाम् उपाविशत्। तदा कश्चित् शृगालः काकस्य मुखे मांसखण्डम् दृष्ट्वा लुब्धः अभवत् । शृगालः तु स्वभावेन एव धूर्तः । सः वृक्षस्य समीपम् अगच्छत् अचिन्तयत् च—अहो ! सरसः अयं मांसखन्डः । अहं केन प्रकारेण इमं ग्रहीष्यामि ? अतः सः शाठ्येन काकम् अकथयत्, "भो विहगराज अपूर्व तव लावण्यम् । त्वादृशं विहगं पूर्वं न अपश्यम् । तव स्वरः तु अतीव मधुरः अहं तु अत्र तव गीतस्य श्रवणाय आगच्छम् ।"

काकः स्वमिथ्या स्तुतिं श्रुत्वा अतीव प्रमुदितः अभवत् । सः तस्यां शाखायाम् इतस्तत अनृत्यत् । तदा शृगालः तम् अवदत्— "अहो ! तव नृत्यम् अपि मनोहरम् । तव गीतम् तु सत्यमेव कोकिलस्य गीतात् अपि मधुरतरं भवेत् ।"

स्वप्रशंसया पुलकितः काकः गानाय प्रवृत्तः अभवत् । तदा मांसखण्डः तस्य मुखात् भूमौ अपतत् । शृगालः तं मांसखण्डं गृहीत्वा वनं प्रति अधावत ।

शब्दार्थ

बुभुक्षितः	भूखा
दृष्ट्वा	देखकर
केन प्रकारेण	किस तरह से
ग्रहीष्यामि	ले लूंगा
श्रवणाय	सुनने के लिए
स्तुतिः	प्रशंसा
मिथ्या	झूठी
श्रुत्वा	सुनकर
इतस्ततः	इधर-उधर
गृहीत्वा	लेकर
लुब्धः	लोभी
प्रवृत्तः	आरंभ किया

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दो—

(क) काकः भूमौ किम् अपश्यत् ?

(ख) सः कुत्र उपाविशत् ?

(ग) वृक्षस्य समीपे अन्य कः आगच्छत् ?

(घ) मिथ्यास्तुतिं श्रुत्वा काकः किम् अकरोत् ?

(ङ) काकस्य मुखात् मांसखंण्डः कुत्रे अपतत् ?

(च) मांसखण्डं गृहीत्वा शृगालः किम् अकरोत् ?

2. रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरो—

(क) काकः शाखायाम् ..... । (अनृत्यन्/अनृत्यत्) ।

(ख) शृगालः मांसखण्डम् ..... । (अलभः/अलभत्)

(ग) शृगालः शाठ्येन ..... (काकम् काकान्) अवदत् ।

3. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) एक कौआ भूखा था ।

(ख) कौए के मुख में मांस का टुकड़ा था ।

(ग) सियार चालाक था ।

(घ) सियार ने कौए को झूठी प्रशंसा की ।

(ङ) सियार ने मास का टुकड़ा कौए से ले लिया ।

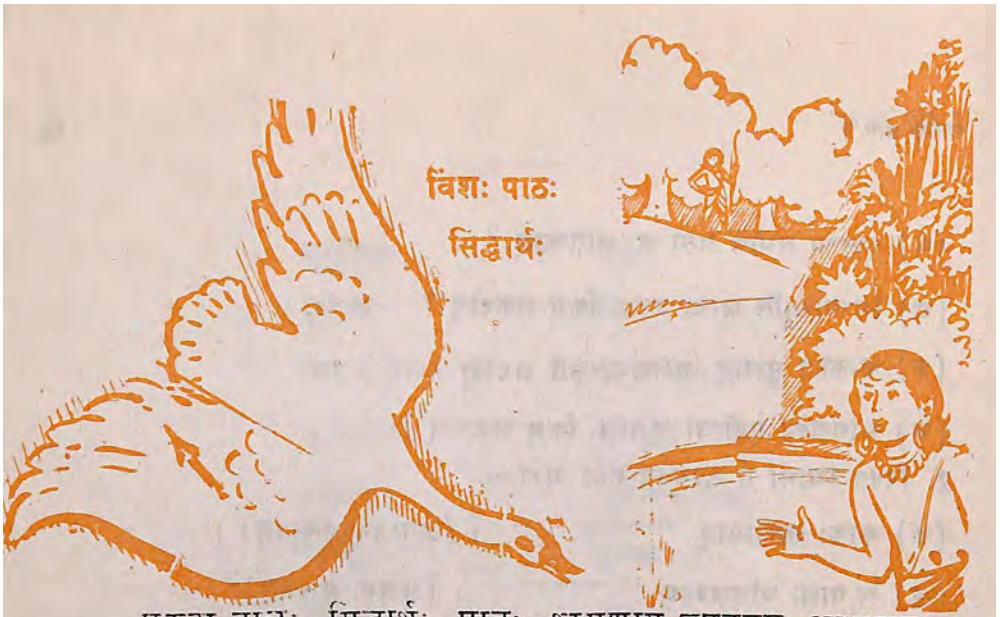

विंशः पाठः

सिद्धार्थः

एकदा बालः सिद्धार्थः प्रातः भ्रमणाय उपवनम् अगच्छत्। उपवने बहवः खगाः मधुरं कूजयन्ति स्म। सिद्धार्थः पक्षिणः अपश्यत्। तेषाम् कलरवं श्रुत्वा अतुष्यत्। किंचित् कालानन्तरं तस्य भ्राता देवदत्तः अपि उपवनम् आगच्छत्। सः शरेण आकाशे एकम् हंसम् अविध्यत्। शरेण विद्धः हंसः भूमौ अपतत्। सिद्धार्थः करुणया तं हंसं कुटीरम् आनयत्। तत्र हंसस्य परिचर्याम् अकरोत्। देवदत्तः स्वशरेण विद्धं हंसं ग्रहीतुं तत्र आगच्छत्। सिद्धार्थः देवदत्तम् अवदत्—"त्वम् अस्य हंसस्य घातकः, किन्तु अहम् तु अस्य रक्षकः। अतः अयम् मम हंसः।"

अथ सिद्धार्थस्य देवदत्तस्य च मध्ये विवादः अभवत्। देवदत्तः नृपस्य समीपम् अगच्छत्। सिद्धार्थः अपि तेन सह तत्र अगच्छत्। देवदत्तः नृपं सर्वं वृत्तान्तम् अकथयत् तथा सिद्धार्थः अपि स्वम् पक्षम् अवदत्। नृपः तम् सर्वम् अशृणोत् निर्णयं च अकरोत्—"अयं हंसः तु सिद्धार्थस्य एव, यतः सः अस्य रक्षकः।" उक्तम् हि "रक्षकः भक्षकात् श्रेष्ठः"

शब्दार्थ

भ्रमणाय	घूमने के लिए
उपवनम्	बगीचा
कलरवम्	मीठी आवाज़
शरेण	तीर से
विद्धः	घायल किया हुआ
अविध्यत	वेध दिया
ग्रहीतुम्	लेने के लिए (ग्रहण करने के लिए)
घातकः	मारने वाला
रक्षकः	रक्षा करने वाला (पालक)
भक्षक.	खाने वाला

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दो—

(क) सिद्धार्थः भ्रमणाय कुत्र अगच्छत् ?

(ख) उपवने खगाः किम् कुर्वन्ति स्म ?

(ग) हंसं दृष्ट्वा देवदत्तः किम् अकरोत् ?

(घ) सिद्धार्थः देवदत्तं किम् अवदत् ?

(ङ) शरेण विद्धः हंसः कुत्र अपतत् ?

(च) हंसस्य रक्षकः कः आसीत ?

2. खाली स्थानो में उपयुक्त शब्द भरो—

(क) खगाः ..... अकुर्वन् ।

(ख) देवदत्तः शरेण ..... अविध्यत् ।

(ग) देवदत्तः सिद्धार्थम् ..... ।

(घ) सिद्धार्थस्य देवदत्तस्य मध्ये विवादः ..... ।

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो –

हंसम्, उपवनम्, खगाः रक्षकः, अतुष्यत्, वृत्तान्तम् ।

एकविंशः पाठः

दशमः त्वम् असि

एकदा दशबालकाः स्नानाय नदीम् अगच्छन् । ते निर्मले शीतले च नदीजले चिरम् व्यहरन् । ते स्नात्वा नद्याः उत्तीर्णाः । तदा तेषाम् नायकः अपृच्छत्—'अपि सर्वे नद्याः उत्तीर्णाः ?' इति ।

तदा कश्चित् बालकः अगणयत्—'एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च, षट् , सप्त, अष्टौ, नव' इति । सः स्वम् न अगणयत् । अतः सः अवदत्—'नव एव सन्ति । दशमः न अस्ति' इति । अपरः अपि बालकः पुनः अन्यान् बालकान् अगणयत् । तदा अपि नव एव आसन्। अतः ते निश्चयम् अकुर्वन् यत् दशमः नद्याम् मग्नः इति । ते दुखिताः तूष्णीम् अतिष्ठन् ।

तदा कश्चित् पथिकः तेन मार्गेण अगच्छत् । सः तान् बालकान् दुःखितान् दृष्ट्वा अपृच्छत्—'बालकाः, युष्माकम् दुःखस्य कारणं किम् ?' इति । बालकानाम् नायकः अकथयत्—'वयम् दश बालकाः स्नातुम् आगताः । इदानीं नव एव स्मः । एकः नद्यां मग्नः' इति ।

पथिकः तान् अगणयत् । तत्र दश अपि बालकाः आसन् । सः नायकम् आदिशत्, त्वम् बालकान् गण इति । सः तु नव बालकान् एव अगणयत् । तदा पथिकः अवदत्—"दशमः त्वम् असि" इति ।

तत् श्रुत्वा ते सर्वे लज्जिताः प्रमुदिताः च गृहम् अगच्छन् ।

शब्दार्थ

स्नानाय	नहाने के लिए
निर्मलम्	साफ
शीतलम्	ठण्डा
चिरम्	देर तक
उत्तीर्णः	निकल आये

रूप परिचय—

पुल्लिग	स्त्रीलिग	नपुंसकलिग
एकः	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि

पञ्च, षट्, सप्त, अष्ट, नव, दश के तीनों लिगों में एक समान रूप होते हैं ।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दो —

(क) कति बालका: स्नानाय अगच्छन् ?

(ख) ते स्नानाय कुत्र अगच्छन् ?

(ग) बालकः कं न अगणयत् ?

(घ) मार्गे कः अगच्छत् ?

(ङ) पथिकः किम् अवदत् ?

2. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत शब्द बताओ—

एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ दस ।

3. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) चार लड़के खेलने के लिए बाग में जाते हैं ।

(ख) सब लड़कों ने दस आम खाये ।

(ग) पाँच मित्र घूमने के लिए जायेंगे ।

द्वाविंशः पाठः

सुभाषितानि

पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तगतं धनम् ।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम् ।। १ ।।

नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः ।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन ।। २ ।।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकः चन्द्रः तमो हन्ति न हि तारागणोऽपि च ।। ३ ।।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ।। ४ ।।

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।। ५ ।

शब्दार्थ

पुस्तकेषु	किताबों में
या	जो
परहस्तगतम्	दूसरे हाथ में गया हुआ
कार्यकाले समुत्पन्ने	समय आने पर
नमन्ति	झुकते हैं
फलिनः	फल वाले
गुणिनः	गुणों से युक्त
शुष्कवृक्षाः	सूखे पेड़
कदाचन	कभी
तमः	अंधेरा
हन्ति	दूर करता है
प्रियवाक्यप्रदानेन	मीठे वचन बोलने से
तुष्यन्ति	सन्तुष्ट होते हैं
वक्तव्यम्	बोलना चाहिए
परपीडनम्	दूसरों को दुःख देना

परिशिष्टम्

शब्दकोशः

अगणयत्	गिना । (गण् धातु, लङ् लकार प्रथम पुरुष, एक वचन)
अग्रे	सामने ।
अचिन्तयत्	विचार किया । (चिन्त्, लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
अजयत्	जीत गया । (जि, लङ्, प्र० पु० एकवचन)
अतिदूरे	बहुत दूर ।
अति समीपे	बहुत पास में ।
अतिष्ठन्	रहे, ठहर गये । (स्था, लङ्, प्रथम पुरुष, बहुवचन)
अत्र	यहाँ ।
अधः	नीचे ।
अधनस्य	धनहीन का ।
अनृत्यत्	नाचा (नृत्, लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
अनेकान्	अनेकों को ।
अपर	दूसरा ।
अपश्यत्	देखा । (दृश्, लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)
अपातयत्	गिरा दिया । (पत्, णिच्, लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)

अपृच्छत् पूछा । (प्रच्छ्, लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन)

अभिवादनशीलस्य नमस्कार करने वाले के ।

अमित्रस्य मित्रहीन का ।

अयम् यह । (इदम् का पुल्लिग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

अर्पयन्ति अर्पण करते हैं । (ऋ, णिच् लट् प्र० पु०, बहुवचन)

अलम् क्रीडया मत खेलो ।

अलसस्य आलसी का ।

अवदत् कहा । (वद्, लङ्, प्र० पु०, एकवचन

अवधानम् ध्यान ।

आवली पंक्ति ।

अविद्यस्य विना विद्या वाले का ।

अश्रृणोत् सुना । श्रु लङ्, प्र० पु०, एकवचन)

अश्वाः घोड़े ।

अस्ति है । (अस्, लट्, प्र० पु०, एकवचन)

अहम् मै । (अस्मद्, प्रथमा, एकवचन)

आ

आगताः आये । आ+गम्+क्त, प्रथमा, बहुवचन)

आगच्छति आता है । (आ+गम्, लट्, प्र० पु०, एकवचन)

आदिशत् आदेश दिया । (आ+दिश्, लङ्, प्र० पु०, एकवचन)

आनयन्ति लाते हैं । (आ+नी, लट्, प्र० पु०, बहुवचन)

आपणम्	दुकान ।
आम्रः	आम ।
आर्द्रः	गीला ।
इ	
इतस्तत	इधर उधर ।
इदानीम्	अब ।
उ	
उत्तीर्णाः	सफल हुए, निकले ।
उदारचरितानां	विशाल हृदय वाले के ।
उद्यमेन	परिश्रम से ।
उद्यानम्	बगीचा उद्यान, बाग ।
उपविशत	बैठो । (उप+विश्, लोट्, म० पु०, बहुवचन)
उल्लासः	हर्ष, आनन्द ।
उष्णाः	गर्म ।
क	
कथयति	कहता है कहती है । (कथ्, लट् प्र० पु०, एकवचन)
कदाचन	कभी भी ।
कन्दुकम्	गेंद ।
कम्पमानम्	कांपते हुए को । (कृ०, लृट्, प्र० पु०, एकवचन)
करिष्यति	करेगा । (कृ० लृट्, म० पु०, एकवचन)
करिष्यसि	करोगे । (कृ, लट् म० पु०, एकवचन)

करोति	करता है। (कृ० लट्, प्र० पु०, एकवचन
करोषि	करते हो। (कृ, लट् म० पुरुष, एकवचन
कलमः	लेखनी।
कालम् नयति	समय बिताता है, व्यतीत करता है।
कश्चित्	कोई।
किम्	क्या।
कुक्कुरः	कुत्ता।
कुतः	कहाँ से।
कुत्र	कहाँ।
कुर्वन्ति	करते हैं। (कृ, लट् प्र० पु०, बहुवचन)
कुसुमम्	फूल।
कूज्	चहचहाना।
केन	किससे।
केन प्रकारेण	किसी प्रकार
केन सह	किसके साथ।
क्रीडति	खेलता है। (क्रीड्, लट्, प्र० पु०, एकवचन)
क्रीडनकम्	खिलौना।
क्रोधेन	क्रोध से।
क्षुद्रखगाः	छोटे छोटे पक्षी।
क्षुधया	भूख से।

ख

खाद्	खाना ।
खादथ	खाते ही । (खाद्, लट्, म० पु० बहुवचन)

ग

गजः	हाथी ।
गम्	(गच्छ्) जाना ।
गमिष्यसि	जाओगे । (गम्, लृट्, म० पु०, एकवचन)
गायति	गाता है, गाती है । (गै, लट्, प्र० पु०, एकवचन)
गुंज्	गूँजना ।
गृहम्	घर ।
गृहीत्वा	लेकर । (ग्रह्+क्त्वा)

च

चक्रम्	पहिया ।
चक्राणि	पहिये ।
चलसि	चलते हो । (चल्, लट्, म० पु, एकवचन)
चिरम्	देर तक ।

ज

जलपानगृहम्	कैंटीन, अल्पाहारगृह ।
जीव्	जीना ।
जीवन्ति	जीते हैं । (जीव्, लट् प्र० पु०, बहुवचन)

त

तडागः तालाब ।

तत्पश्चात् उसके बाद ।

तत्र वहां ।

तमः अन्धकार ।

तव तेरा ।

तस्मात् उससे । (तत्, पु०, पंचमी, एकवचन)

तीर किनारे पर ।

तु तो

तूष्णीम् चुपचाप ।

ते वे सब । (तत्, पु, प्रथमा, बहुवचन)

त्रोटयति तोड़ता है । (त्रुट्, णिच्, लट् प्र० पु०, एकवचन)

त्वम् तू, तुम (युष्मद् प्र० वि०, एकवचन)

द (दृश्, णिच्, लङ्, प्र० पु०, एकवचन)

दर्शय दिखाओ । (दृश्, णिच्, लोट्, मध्यम पु०, एकवचन)

दर्शयति दिखाता है ।

दुःखभाग दुःखी, दुःख का भागी ।

दुग्धम् दूध ।

दुर्जनः दुष्ट, खल ।

देवालयः मन्दिर ।

दृष्ट्वा देखकर । (दृश्+क्त्वा)

ध	
धावति	दौड़ता है। (धाव्, लट्, प्र० पु०, एकवचन)
न	
न	नहीं।
नमः	नमस्कार।
नमयन्ति	झुकाते हैं। (नम्, णिच्, प्रथम पु० बहुवचन)
नरः	मनुष्य।
निन्दन्ति	निन्दा करते हैं।
निपातितः	गिराया गया।
निरामयाः	नीरोग।
निर्बुद्धेः	बुद्धिहीन के लिए।
निर्मल	स्वच्छ।
नीडम्	घोंसला।
नौका	नाव।
प	
पच्	पकाना।
पचति	पकाता है। (पच्, लट् उत्तम पु०, एकवचन)
पञ्चत्वम् अगच्छत्	मृत्यु को प्राप्त हुआ।
पठति	पढ़ता है। (पठ् लट् प्र० पु०, एकवचन)
पत्रम्	पत्र।
पथिकः	यात्री, मुसाफिर।

परिपूर्णः	पूर्ण ।
परोपकारः	दूसरों की भलाई ।
पश्यन्ति	देखते है । (दृश्, लट् प्र० पु०, बहुबचन)
पाठयति	पढ़ाता है । (पठ्, णिच्, लट् प्र० पु०, एकवचन)
पारितोषिकम्	पुरस्कार ।
पुण्याय	पुण्य के लिए ।
पुलकितः	खुश, प्रसन्न ।
पुष्पम्	फूल ।
पुस्तकम्	पुस्तक ।
पूजनाय	पूजन के लिए । (पूजन, चतुर्थी एकवचन)
पूजयन्ति	पूजते हैं । (पूज्, लट् प्र० पु०, बहुवचन)
पृच्छति	पूछता है । (प्रच्छ्, लट्, प्र० पु०, एकवचन)
पोषयति	पोषण करता है । (पुष्, णिच्, लट् प्र० पु०, एकवचन)
प्रकोपाय	क्रोध के लिए ।
प्रत्यागच्छाम	वापस आये । (प्रति+आ+गम्, लङ्, उत्तम पु०, बहुवचन)
प्रदानेन	प्रदान करने से, देने से ।
प्रमुदिता	प्रसन्न हुआ । (प्र+मुद्+तः, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन)

प्रविशन्ति	प्रवेश करते हैं। (प्र+विश्, लट्, प्रथम पु०, बहुवचन)
प्रवृत्तः	आरंभ किया।
प्रसीदतु भवान्	आप प्रसन्न हों।
प्रियम्	मधुर, प्यारा।
प्रेषयन्ति	भेजते हैं।
प्रेषयिष्यामः	भेजेंगे।
ब	
बहिः	बाहर।
बहूनाम्	बहुत से।
बालकः	लड़का।
बुभुक्षितः	भूखा।
भ	
भगिनी	बहन
भवति	होता है। (भू, लट् प्र० पु०, एकवचन)
भवेत्	होना चाहिए।
भद्राणि	कल्याण।
भल्लूकः	भालू।
भ्रमरः	भौंरा।

भारतवर्षस्य	भारतवर्ष का, भारतवर्ष के ।
भूषयति	सजाता है । (भूष्, लट्, प्रथम पु०, एकवचन)
भोजनाय	भोजन के लिए ।
म	
मनोहरम्	मनोहर, रमणीय, अच्छा लगने वाला ।
मन्दम् मन्दम्	धीरे-धीरे ।
मम	मेरा । (अस्मद्, षष्ठी विभक्ति, एकवचन)
महती	बहुत अधिक ।
मकरः	मगरमच्छ ।
मग्नः	डूबा हुआ, डूब गया ।
मनोरथैः	इच्छा मात्र से ।
मांसखण्डम्	मांस का टुकड़ा ।
मालाकारः	माली, माला बनाने वाला ।
मिथ्या	झूठ
मृगः	हरिण ।
मिष्टान्नानि	मिठाइयाँ ।
य	
यानम्	वाहन, सवारी ।
युष्माकम्	तुम्हारा । (युष्मद्, षष्ठी बहुवचन)

यूयम् तुम सब । (युष्मद्, प्रथमा, बहुवचन)

र

रचयन्ति बनाते है । (रच्, लट्, प्र० पु०, बहुवचन)

रम्यम् सुन्दर ।

ल

लघुचेतसाम् छोटे विचार वालों की ।

लिखति लिखता है । (लिख्, लट्, प्र०पु०,एकवचन)

लुब्धः लोभी ।

व

वयम् हम सब । (अस्मद्, प्र० पु०, बहुवचन)

वसति रहता है । (वस्, लट् प्र० पु०, एकवचन)

वसुधा पृथ्वी, धरती ।

वानराः बन्दर (बहुवचन)

विकसति खिलता है बिकसित होता है । (वि+कस्, लट्, प्र० पु०, एकवचन)

विचरन्ति विचरण करते हैं । (वि+चर्, लट्, प्र० बहु०, बहुवचनम्

बाँटता है । (वि+तृ, लट्, प्र० पु०, एकवचन ।

विनोदेन मनोरंजन से ।

विविधाः अनेक प्रकार के ।

विषये	विषय में, सम्बन्ध में ।
वृत्तान्तम्	समाचार ।
वृद्धोपसेविनः	वृद्धों की सेवा करने वालों के ।
वृष्टिः	वर्षा ।
वेगः	गति ।
व्यवहरन्	व्यवहार करते रहे । (वि+अव्+हृ+लङ, प्र० पु०, बहुवचन)
श	
शठः	दुष्ट ।
शाखा	टहनी ।
शावकाः	पशु-पक्षियों के बच्चे ।
शीतलः	ठण्ढा ।
शुकः	तोता ।
श्रवणाय	सुनने के लिए ।
श्रान्ताः	थके हुए ।
श्रुत्वा	सुनकर । (श्रु+क्त्वा)
स	
सत्वरम्	जल्दी ।
सन्ति	हं (अस्, लट्, प्र० पु०, बहुवचन)
सह	साथ ।

सिध्यन्ति	सफल होते हैं। (सिध्, लट्, प्र० पु० बहुवचन)
सुप्तस्य	सोये हुए के।
स्तुतिः	प्रशंसा।
स्नातुम्	स्नान करने के लिए। (स्ना+तुमुन्)
स्नात्वा	स्नान करके। (स्ना+क्त्वा)
स्नानाय	स्नान करने के लिए। (स्नान, चतुर्थी, एकवचन)
स्वम्	अपने आप को।
स्वानि स्वानि	अपने अपने।
ह	
हि	क्योंकि, निश्चय हो।
हृदयेषु	हृदयों मे, मन में।
ह्यः	कल (बीता हुआ)।

NIRAN
3023
11 May 2001

रचना

प्रथमो भागः

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0503